Vol 6 Issue 2 Nov 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor :3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 2 | November - 2016

Review Of Research

सूफी काव्य में गुरु संबंधी अवधारणा

Dr. Priyenka

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति का तात्पर्य मात्र वैदिक अथवा पौराणिक संस्कृति से नहीं है, अपितु अद्यतन संस्कृति से भी है। अपनी सार्वभौम प्रकृति के कारण विश्व में अनन्यतम इस संस्कृति को पहले निगमागम सम्मत और फिर सामासिक संस्कृति के रूप में भी स्वीकृत एवं प्रतिपादित किया गया है। युग धर्मानुसार इस संस्कृति में निहित सनातन तत्त्वों का अवलोकन करते समय एक सत्य विशेषतः रेखांकित होता है और वह है-गुरु की महिमा। अर्थात् हिन्दू, मुस्लिम सिख, जैन एवं ईसाई संस्कृति के सम्यक् रूप से है और जो परस्पर घुल-मिलकर भारतीय संस्कृति का स्वरूप बनाते हैं। इन सभी संस्कृतियों में 'गुरू' का पर्याप्त महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। सामान्य अर्थ में गुरु का अर्थ है- बड़ा, किन्तु व्युत्पतिपरक दृष्टिकोण से गुरु शब्द को समझा जा सकता है। सामान्यतः 'गु' का अर्थ है- अंधकार और 'रू' का तात्पर्य तमोनाश अर्थात् जो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाए वही गुरु है-

'गु'शब्दत्वन्धकारस्याद् 'रू' शब्दत न्निरोन्धक।
अन्धकार-निरोधत्वात् 'गुरु रित्यभिधेयते।।

गुरु ही आत्मा और परमात्मा के बीच का सेतु है। इसकी प्राप्ति के लिए समय-समय पर सूफी साहित्य से पूर्व वैदिक साहित्य व इतर साहित्य में गुरु को विभिन्न प्रतीकों से लक्षित किया गया है। प्राचीन भारतीय संस्कृति में गुरु का गौरवगान करते हुए उसे देव तुल्य माना गया है-

गुरूर्ब्रह्मा, गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरु साक्षात् परब्रह्मा तस्मै श्री गुरूवै नमः।।
अखंड मण्डालाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरूवै नमः।।

सिख धर्म की तो धुरी ही गुरु है- 'इक ओंकार सतनाम कर्तापुरख निर्मोह, निर्वेह, अकाल मूरत, अजुनी शुभम, गुरु प्रसाद, जप आद सच, जुगाड सच, है भी सच नानक होसे भी सच,- गुरूवाणी।

संस्थागत दृष्टि से भारत में गुरूकुल की परम्परा रही है। इसका मूल उद्देष्य शिष्य का सभी प्रकार के भौतिक सुखों का त्याग कर मानसिक वृत्तियों पर अधिकार करने के पश्चात् मन में एक आस्था के साथ शिक्षा ग्रहण करना रहा है। वहां उन्हें यह सिखाया जाता था कि लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए गुरु के प्रति आस्थावान होना चाहिए। शिष्यों के लिए बीज मंत्र था-

मातृदेवोभव पितृदेवो भव
आचार्यदेवो भव अतिथिदेवो भव।।

गुरु एक शक्ति के रूप में काम करता है। गुरु वह शक्ति है जो मानव चित्त वृत्तियों को संयचित करके मनुष्य को लोकोपकार की ओर उन्मुख करता है। जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है कि सूफी साहित्य में गुरु संबंधी विचारों को प्रतीकात्मक शैली में व्यक्त किया गया है। कहीं उसे वधिक रूप में, कहीं सुरमा, कहीं लुहार कहीं राहगीर, पारस आदि विभिन्न प्रतीकों में वर्णित किया गया है। वह एक ओंकार सत्य नाम वाला कर्ता आदि पुरूष निर्भय, अकाल मूर्ति, अयोनि एवं स्वयंभू है। भारतीय उपासना पद्धति में ही नहीं, अपितु विभिन्न धर्म सम्प्रदायों के अन्तर्गत भी गुरु का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। बौद्ध सम्प्रदाय में 'बुद्ध' जैनियों में 'जिन' इस्लाम में पीर-पैगम्बर' व इसाई धर्म के 'फादरमाल' लगभग वही महत्त्व रखते हैं जो हिन्दू धर्म के अन्तर्गत 'गुरू' को प्राप्त है। सिद्ध कवि मूलतः बौद्ध धर्म को मानने वाले थे। बौद्ध धर्म की ब्रजयानी शाखा के समय से आत्मा में गुरु को कल्पित किया जाने लगा था। हिंन्दू तथा बौद्ध तांत्रिकों ने गुरु को हृदयस्थ एवं शिरस्थ माना है। गुरु

का उपदेश व ज्ञान उनके लिए अमृत था। अपभ्रंश के प्रसिद्ध सरहपा ने कहा है–यदि गुरु का उपदेश हृदय में जम जाए तो निश्चय है कि अपना अभिष्ट हाथ लग जायेगा। सिद्ध गोरखनाथ ने भी कहा है कि जिस प्रकार सभी नदियों का जल समुद्र में ही जाकर समा जाता है, उसी प्रकार शिष्य को भी विश्वास करना चाहिए–

कोई बादी कोई बिबादी जौगीं को बाद न करना।
अउसठि तीरधि संभदि समावै, भू जोगी को गुरु मुषि जरना।।

जैन काव्यों में सतगुरु का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैन साहित्य में सतगुरु व ब्रह्म में कोई भेद नहीं किया गया है। जैन कवियों ने अर्हन्त एवं सिद्ध गुरु के द्वारा ही गोबिन्द के दर्शन संभव है। जैन कवि गुरु भक्त थे। उन्होंने पंचपरमेष्ठी को 'पंचगुरू' को कहा है। कवि बनारसीदास ने 'नाटक समय सार' में गुरु को मेघ के समान कहा है। गुरु में मेघ की ही भांति बानी रूपी अखंडित धार निकलती है और उससे सब प्राणियों का हित होता है–

ज्यों बखे बरषा समै, मेघ अंखडित धार।
त्यौं सतगुरु बानी खिरै, जगत, जीव हितकार।।

जैन कवि मुनि राम सिंह ने गुरु कृपा द्वारा देह के भीतर देव को प्रतिष्ठित करने की सलाह दी है। उनके मत में लोग तभी तीर्थादि में व्यस्त रहा करते है, जब तक वे गुरु कृपा द्वारा देह के भीतर देव को नहीं जान पाते। इस तरह मध्यकालीन संत एवं सूफी काव्य में उपर्युक्त योगियों एवं साधकों का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

'सूफी' शब्द का अर्थ एवं 'सूफी मत' का विकास

हिन्दी साहित्य में सूफी काव्य से अभिप्राय साधरणतः प्रेमाख्यान काव्य समझा जाता है। सूफी शब्द का अर्थ 'लुगात किशोरी' ने बड़े सुन्दर ढंग से किया है–सूफ, पश्म या ऊन। सूफी फकीरों की राय में 'सूफी' वह शख्स है जो अपने दिल में खुदा के सिवाय किसी का ख्याल न आने दे और अपनी तबीयत को गंदगी दुनियां से पाक व साफ रखे। विशेष अर्थ में मुखलिस, निष्टपट, तसब्बुक, पशमीना, उनी कपड़ा पहनना। शास्त्रीय अर्थ में बुरे ख्वाहिशात, बुरी इच्छाओं से पाक होना। संकुचित अर्थ में इल्म फकीरी। पैगम्बर हजरत द्वारा निर्मित मदीना की मस्जिद के सामने एक चबूतरा जिसे सफ्फा' कहते थे। अधिकांश विद्वान 'सूफी' शब्द को 'सफा' से पैदा जिसका अर्थ पवित्रता है। एक 'सूफी साधक' के लिए त्याग एवं वैराग्यपूर्ण जीवन, आचार व्यवहारगत पवित्रता, एकनिष्ठभाव से परमात्मा का ध्यान अति आवश्यक है। अपने आचरण व हृदय दोनों को पवित्र व स्वच्छ रखने के कारण जो लोग निर्णय के दिन अल्लाह के सामने एक अलग पंक्ति में किए जाएगें वे ही 'सूफी' कहलायेगें।

इस्लाम में रहस्यवादी साधक सूफी नाम से प्रख्यात है। सूफी काव्यों का प्रारंभ अरब और फारस में हुआ था। बाद में सूफियों के काव्य साहित्य जिनमें प्रबंध काव्य की प्रधानता है, हिन्दी के सूफी काव्य कहलाए। हजरत मुहम्मद के उपदेशों के दो वर्ग–बुद्धिपक्ष (इल्मे–सफीना) कुरान में इसी पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है। हृदय पक्ष (इल्म सीना) को संसार के विरक्त त्यागी एवं परमात्मा के प्रेम में तल्लीन रहने वाले सूफी साधकों ने अपनाया। जहां कुरान में औपचारिक पठन–पाठन, हज्म, नमाज पर जोर दिया वहीं सूफियों ने आंतरिक अनुशासन और हृदय की शुद्धता पर अधिक बल दिया। वैसे तो सूफी संतों का आगमन ११वीं शताब्दी के आसपास प्रारंभ हो चुका था, लेकिन साहित्य में सूफी मत का प्रतिपादन व्यापक रूप से संत साहित्य के बाद ही हुआ। सूफी साधना पद्धति में गुरु महिमा का विशेष महत्व है। किसी भी साधक को साधना का रहस्य जानने के लिए और प्रेममार्ग में अग्रसर होकर सफलता प्राप्त करने के लिए किसी पीर (गुरू) की जरूरत होती ही है। सूफी साधकों के अनुसार 'साधक पहले अपने शेख (दरगाह का खलीफा) के प्रति आत्मसर्म्पण करता है। फिर शेख उसे पीर (गुरू) के पास ले जाता है, पीर के द्वारा वह रसूल या मुहम्मद साहब के प्रभाव में पहुंचकर क्रमशः साधना में परिपक्व होता हुआ परमात्मा के सामने पहुंच जाता है। सूफी काव्य की रोमांटिक रचनाओं में साहस, प्रेम, सौन्दर्य कल्पना एवं अलौकिक तत्वों की कल्पना ही है।

सूफियों की गुरु संबंधी दार्शनिकता

मध्यकालीन सूफी काव्य में उपर्युक्त योगियों एवं साधकों का प्रभाव दृष्टिगत तो होता ही है साथ में ज्ञानमार्गी संतों का भी अधिक प्रभाव दृष्टिगत होता है। हिन्दी सूफी काव्य की भव्य ईमारत भारतीय पृष्ठभूमि पर खड़ी है। जिन्होंने जगह–जगह इड़ा, पिंगला आदि का वर्णन कर हठ योग को प्रश्रय दिया है। सूफी कवि राज सुख की अपेक्षा योग साधना को श्रेष्ठ मानते थे। सूफी कवियों ने 'गोरख' शब्द को गुरु का पर्याय रूप में अपनाया है। सूफी प्रेमाख्यान काव्यों में नायकों ने योगियों के वेश धारण किए हैं। सूफी कवियों ने हठयोग के आधार पर पिंड में ब्रह्माण्ड की कल्पना की है। सभी सूफी कवियों ने ब्रह्म, जीव, जगत्, माया आदि पर अद्वैतवाद का गहरा पुट दिखाया है।

समस्त साधकों ने उपासना के लिए निराकार ब्रह्म को ही मान्यता प्रदान की है। जायसी के मतानुसार ईश्वर एक है उसके समान दूसरा नहीं। अतः वह अद्वितीय है। उससे कोई स्थान रिक्त नहीं है–

न कोई है आहि के रूप।
न ओहि काहू अस तइस अनूपा।।

मौलाना दाउद ने 'चंदायन' में परमात्मा को एकमात्र सृष्टिकर्ता स्वीकार करके उसकी स्तुति की है। कुतुबन कहते हैं कि परमतत्व निरंजन है, जो देखा नहीं जा सकता। उसमान ने भी परमेश्वर को जगत् का कर्ता और उसे सब में व्याप्त माना है। शेखनवी ने अपने ग्रंथ 'ज्ञानदीप' में ईश्वर को पाक्, पवित्र, अमूर्त, अलख और पापों का नाश करने वाला कहा है–

पाक्, पवित्र एक ओट करता। अलख अमूर्त पापक हरता।।

इस प्रकार स्पष्ट है कि समस्त सूफी कवियों का परमतत्व निर्गुण है। सूफियों का ईश्वर परम सौंदर्यशील और प्रेम का पात्र है। सूफियों ने जीव को पुरूष तथा स्त्री को परमसता के रूप में रेखांकित किया है। साधना के क्षेत्र में साधक को रास्ता दिखाने वाले गुरु भी इसी गुरु की मर्जी पर काम करते है।

सूफी कवियों ने जीव के विषय में अद्वैत को ही ग्रहण किया है। ये मानते हैं कि जीव व ब्रह्म में कोई अंतर नहीं। जीव ब्रह्म का ही अंश है। जायसी कहते हैं– ऐ जीव तू अपनी पृथक सत्ता के अंहभाव को समाप्त कर ब्रह्म से एक होकर रह। जीवात्मा ही परमात्मा है। इस तत्व को जीवात्मा न पहचाने के कारण ही जीव लोक में दुख एवं कष्ट भोगता है। सूफी कवि नूर मुहम्मद कहते हैं–

आपूहि दाता करता होई, द्रिस्टा स्रोता वक्ता सोई।

कवि उसमान ने भी जीव तथा ब्रह्म में एकरूपता दर्शायी है– एक गोत परगट सब ठाउं। जायसी कृत 'पदमावत्' के नायक राजा रत्नसेन में शूरता सर्वत्र देखने को मिलती है। प्रेममार्गी जीव प्रेम की पीड़ा से अभिभूत है– कठिन मरन ते प्रेम बेवस्था। न त्रिउ जियै, न दसवं अवस्था।। जीव या साधक का लक्ष्य मोक्ष है तथा मोक्ष की प्राप्ति में भी परमसता का ही हाथ होता है।

सूफी काव्य के समस्त कवियों ने माया को मिथ्या, चंचल, नश्वर, दुखदायी और जीवात्मा को भ्रम में डालने वाली की संज्ञा दी है। माया अंहकार की जननी है। सूफी कवियों ने माया को अंतर्पट, अंधकार, ठग, चोर, तस्कर, नागमती, शैतान आदि रूप में ग्रहण किया है। काम, क्रोध, मद एवं लोभ माया के चार बड़े चोर है। जायसी ने अपनी कृति पद्मावत' में राजा रत्नसेन से अंतर्पट की बात कहलाई है। जब तक मैंने करोड़ों माया रूपी पर्दे पड़े थे–

जब लगि गुरु मैं अहा न चील कोटि अन्तर पट बिच हुत दीन्हा।।

नूरमुहम्मद ने अपनी रचना 'अनुराग बांसुरी' में मन भावती खंड में मनभावती के रूप सौन्दर्य को माया मोह का जाल बताया है–

माया मोह के जाल बिघाबहू, मन भावती रूप ध्न ध्नी। को न रहा जो तनि चाहा।।

साधना के क्षेत्र में माया का यही मोहक रूप अवरोध पैदा करता है, और जीव को कुप्रवृत्ति की ओर ले जाता है। माया से बच के रहने में आत्मज्ञान व गुरु ज्ञान अपेक्षित है।

सूफी काव्य रचनाओं में गुरु

सूफियों ने अपने काव्य के अन्तर्गत परमात्मा की स्तुति, देवी-देवताओं का स्मरण, समकालीन शासक की प्रशंसा, रचना के प्रेरणा स्रोत एवं उद्देश्य का उल्लेख शुद्ध भारतीयता के आधार पर किया है। दोहा-चौपाई शैली उनके काव्य रचनाओं में अपभ्रंश की देन है। सूफी कवियों की कथावस्तु मुख्य रूप से प्रेम-चित्रण, वस्तुवर्णन, बारहामासा एवं षट्ऋतु वर्णन आदि पर आधारित है। भारतीय लोक कथाओं की तरह चित्र दर्शन, स्वप्न-दर्शन, साक्षात् दर्शन सूफी काव्य में मिलते है। भक्ति काल की निर्गुण काव्य धारा के अन्तर्गत हिंदी के लगभग सभी सूफी कवियों ने कथा काव्य की रचना की है। लौकिक अर्थात् सांसारिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है। प्रेम मार्ग को विरह मानकर, साधना एवं भक्ति का मार्ग प्रशस्त किया है जिसमें गुरु का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

चंदायन

सूफी काव्यधार के प्रथम हिंदी सूफी कवियों में मुल्लादाऊद का नाम अग्रणी है। लौकिक सौंदर्य की पृष्ठभूमि पर पारलौकिक सौन्दर्य का उल्लेख। दाऊद के गुरु का नाम जैनुद्दीन था। रचनाकाल ७८१ हिजरी, १३९८ ई० है।

सेख जैनदी हो पथि लखा। धरम पथु जिह पाप गवाणा।

प्रारंभ में परमात्मा की वंदना, मुहम्मद की स्तुति, चार यारों का वर्णन, समकालीन शासक की प्रशंसा, गुरु प्रशंसा, आश्रमदाता का गुणगान, रचनाकाल आदि का वर्णन है। यह रचना १७ खंडों में विभाजित भाषा पुरानी अवधी। दोहा-चौपाई शैली। पांच-पांच चौपाईयों के बाद एक दोहा। इस रचना में विशेषतः गुरु की महत्ता का ब्यान किया है।

मृगावती

सूफी कवि कुतुबन और उनकी रचनाकाल : ९०९ हिजरी, संवत् १५६० सन् १५०३ ई० मानी जाती है।

गुरु का नाम शेख बुढनपीर- 'सब सो बड़ा सा पीर हमारा।' मृगावती में चन्द्रनगर के राजा गणपति के राजकुमार और कंचनपुर के राजा की कन्या मृगावती की प्रेम कहानी का वर्णन है। मृगावती को हिंदू संस्कृति के अनुरूप जनमानस के समक्ष रखा है। इस रचना के माध्यम से प्रेम गाथा को अभिव्यक्त करने के साथ-साथ गुरु के अस्तित्व को अधिक महत्व दिया गया है।

पदमावत्

मलिक मुहम्मद जायसी : जन्म ८७० हिजरी सन् १५४२ ई०। गुरु : सैयद असरफ, गुरु मौहदी।
सैयद असरफ पीर पीयारा। तिन्ह मोहि पंथ दीन्ह उजियारा।।
गुरु मौहदी खेवक मैं सेवा। चलै उताइल जिन्ह कर खेवा।।

गुरु कृपा के बिना जीवन को निरर्थक माना है। जब तक गुरु की कृपा हो तब तक शिष्य सिद्धि के भेद को नहीं जान पाता। प्रेम की पीर को अत्यधिक महत्व दिया है। पद्मावत : रचनाकाल : ९२७ हिजरी, १५२७ ई०। राजा रत्नसेन (मन) पदमावति (बुद्धि)। जायसी : गुरु कृपा को साधक के लिए संजीवनी बूटी के समान माना है। पद्मावत के बोहित खंड में- 'गुरु हमारा तुम राजा, हम चेला तुम नाथ। जहां पावं रखै गुरु चैला जेई पथ दिखावा। बिन गुरु जगत् को निर्गुण पावा। नागमती यह दुनियां धंधा, वांचा सोई न एहि चित बंधा।।
हमारे हस्ति गुरु है साथी।।
कठिन खेल औ मारग संकरा। बहुतन्ह खाइ फिरे सिर टकरा।
मरन खेल देखा जो हंसा। होई पतंग दीपक महं धंसा।।
तन पतंग भिरिंग के नाई। सिद्ध होई जो जुग-जुग ताईं।।
बिन जिउ दिए पावै न कोई। जो मरजिआ अमर न सोई।।

चित्रलेखा

सूफी काव्य परम्परा में यह रचना एक प्रेम कहानी है जो अवधी भाषा में रचित है। इस रचना में सात-सात अर्द्धलियों के बाद एक दोहा है। आध्यात्मिक संकेत से भरपूर रचना है। लौकिक प्रेम के माध्यम से आलौकिक प्रेम का जिक्र इस प्रेमकाव्य में किया गया है। प्रियतम तथा प्रियतमा के प्रतीकों के आधार पर इस लोक को नैहर और उस लोक को प्रियतम का लोक मानते हैं। जायसी प्रभु प्रेम की प्राप्ति के लिए विरह को अति आवश्यक मानने के साथ-साथ गुरु की प्रसांगिकता को सार्थक बताया है-

झूलि लेहू नैहर जब ताई। फिर कत झूलन दैहैं साई।
लौके ससुर राखिहैं तल नैहर गवन न पाइब जहां।।

अखरावट

मलिक मुहम्मद जायसी की यह रचनाकाल : ९४८ हिजरी का अन्त ९४९ हिजरी प्रारंभ सन् १५४२ई० में हुआ। इस काव्य रचना में दोहा खण्ड ५३ हैं। अखरावट का संबंध 'आखरों 'अक्षरों से है। जायसी के अनुसार 'अखरावट' ज्ञान का कठघरा है-

कहौं सौ ज्ञान ककहरा, सब आबर मंह लेखि।

जायसी ने परमात्मा जीव, सृष्टि, जगत् एवं साधना के संबंध में प्रकाश डाला है। अखरावट' अपनी श्रेष्ठता एवं गंभीरता के लिए हिंदी साहित्य जगत् में एक विशिष्ट एवं सम्मान पूर्ण स्थान रखता है। सूफियों ने गुरु का उल्लेख हर रचना में किया है। गुरु के बिना उन्होंने सभी कार्यों को असंभव माना है।

आखिरी कलाम :

इस काव्य रचना का रचनाकाल : ९३६ हिजरी है। इस रचना में ६० दोहै तथा ४२० अर्द्धलियां हैं। आखिरी कलाम में विरह की अभिव्यक्ति, गुरु की स्तुति तथा हिंदू व मुस्लिम संस्कृतियों के मेल कराने की प्रवृत्ति भी परिलक्षित होती है।

कहरनामा

मलिक मुहम्मद जायसी की यह रचना एक अन्योक्ति रूपक परक खंड काव्य है। कहार को आधार मानकर उसकी वृत्ति का संबंध जीवात्मा से जोड़ने में जायसी सफल हुए है। यहां जीवात्मा को एक दुल्हिन माना है। कहार डोली में बिठाकर उसे प्रियतम के पास ले जाता है। गुरु को परमात्मा, साधक, पीर, मुहम्मद न जाने क्या-क्या मानकर सूफियों ने अपनी रचनाओं में जगह दी है।

मसलनामा

यह रचना भी मलिक मुहम्मद जायसी जी ने की है। उनका मानना है कि गुरु का मार्गदर्शन कठोर साधना तथा परमात्मा

कृपा तीरों के समन्वय में ही साधक की सफलता निहित है। वे मानते है कि जो स्वर्ग मुक्ति पाना चाहता है उसके लिए स्वयं का अवसान अति जरूरी है–

आप मरे बिनु सरग न छुआ।।

मधुमालती

सूफी कवि मंझन द्वारा रचित यह अति उच्चकोटि की रचना है। जिसकी रचना १५४५ ई०। मधुमालती की कहानी प्राचीन है। डॉ. इकबाल अहमद का मत समस्त कथा में हिंदू वातावरण का बोलबाला है। जितने पात्र है, सभी हिन्दू है। यहां तक की परमात्मा तक को ब्रह्म कहता है। यह अलग प्रकार की कहानी है। क्योंकि मंझन ने मधुमालती को मनोहर से मिलने के बाद उसे सती होने नहीं दिया। सूफियों ने गुरु को ही सफलता की धूरी माना है।

चित्रावली

कवि उसमान द्वारा यह रचना पूर्णतः कल्पना के धरातल पर लिखी गई है। लौकिकता के द्वारा परोक्ष की तरफ संकेत किया है। डॉ रामकुमार वर्मा 'चित्रावली' को हम पद्मावती की छाया कह सकते हैं। उसमान ने गुरु एवं शिष्य के अटूट संबंधों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। जिस साधक को गुरु का निर्देशन प्राप्त नहीं होता वह अंधे व्यक्ति की तरह चारों और भटकता फिरता है।

जा कह गुरु पंथ न देखावा। सो अंध चारिहूं दिसी धण।
मूंड मुडाए जग फिरे जोगी होय न सिद्ध
जा कह गुरु किरपा करहिं सौ पावै नौ निद्ध।।

ज्ञानदीप

शेखनवी की यह रचना प्रेम पर आधारित है। परमात्मा में दृढ आस्था थी। ज्ञानदीप के अन्तर्गत सारी बातें हिन्दू संस्कृति के अनुकूल थी। प्रेमभाव नायक की अपेक्षा पहले नायिका में होना जरूरी है। ज्ञानदीप में नायक ज्ञानदीप को गुरु सिद्धनाथ का शिष्यत्व ग्रहण करना पड़ा।

हंस जवाहिर

कासिमशाह की यह रचना पूर्णतः काल्पनिक कथा है। इसमें संसार एवं जीवन की क्षणभंगुरता का बोध कराया है। हंस जवाहिर' में पीरों की चर्चा करते हुए पीर करीम, मुहम्मद अशरफ एवं उनके पुत्र अता का गुणगान किया है। अपने दीक्षा गुरु पीर अशरफ का जिक्र भी किया है। गुरु महिम के बारे में गुरु की सत्यवादिता की खुलकर प्रशंसा की है।

डोले करम तो करतगति, गुरु कर वचन न डोल।
कासिम सुन गुरु मुख सबद, सल्य अलख के बोल।।
सुफल दिवस आवै जबै, होय गुरु से भेंट।
दुख पाप सब मैरिये, औगुन जाए सो मेट।।

इन्द्रावती एवं अनुराग बांसुरी

सूफी कवि नूर मुहम्मद बहुश्रुत व बहुज्ञ थे। इन्द्रावती में अजीज प्रियतम के प्रति अपने प्रेम व भक्ति का निवेदन किया। 'अनुराग बांसुरी' में अंतकरण बुद्धि चित, अंहकार, संकल्प, मोहनी, सर्वमंगला आदि पात्र प्रेमकथा के माध्यम से इन्द्रिय बोध के द्वारा आध्यात्मिक साधना का संकेत देते है। नूरमुहम्मद ने गुरु को सबसे ज्यादा मृदुल एवं कोमल स्वभाव वाला कहा है। गुरु कृपा मिलते ही मंजिल खुद–ब–खुद मिल जाती है।

सत वचन भाखा तुम स्वामी जोगी होहि ध्यान सो कामी।
ये माता स्वामी के हाथा, पाए लाभ होए एहि साथा।।
बिन गुरु माल होंउ कत चेला, बिन गुरु दया चालौं अकेला।
बिन गुरु पंथ न पावै कोई, कौतिकों ज्ञानी ध्यानी होई।
गुरु ऐसो मीठी कहहू नाहि, जहं गुरु तहां तक्र मिटि जाहिं।
कामयाब सो गुरु अति भावै, सो हित जो गुरु ताहि जिवावै।।

शेखरहीम गुरु की पद वंदना एवं आज्ञापालन साधक का सर्वोतम कर्तव्य मानते हैं। गुरु के चरणों की सम्मानपूर्वक वंदना करके मार्ग संबंधी आदेश लेना साधक का कर्तव्य बनता है। अपनी कृति में कहते है–

प्रेमा जाए दण्डवत कीन्हा, गुरु चरण माथे पर लीन्हा।

कर दया मोहै पंथ बताउं, जोहि विधि मिले सेा भेद बताउं।।

सूफी कवि अली मुदाद के अनुसार यदि गुरु अगुवा' हो जाए तो सिद्धि निश्चित है–

आगे तो गुरु का करते, पाछ वाके जाप।
अहमद का दामन पड़क, वाहिद से झट मिल जाव।।

सूफी कवि हरि व गुरु में कोई अन्तर नहीं मानते। वास्तव में वो दोनों एक है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सूफी साधना एवं काव्य रचना का आधार स्तम्भ गुरु ही है। गुरु के उपदेश से तो 'मरजीवा' साधक को भी मुक्ति मिल जाती है। सूफी साधना में गुरु द्वारा दिया गया ज्ञान फलदायी होता है। फिर साधक की साधना चाहे ज्ञान और भक्ति की हो अथवा योग तथा कर्म पद्धति की, सर्वत्र गुरु ही साधना पथ के विघ्नों को दूर कर साधक को परमतत्त्व से मिला देता है। सूफी तथा संत साधना में प्रेम का महत्त्व है। इन कवियों ने साधना के नाम पर किए जाने वाले बाह्यडांबरों की निंदा खुल कर की है। सूफी और संत कवि लोकमंगल तथा सदाचार की भावना लेकर चलते हैं। दोनों ने ही चित नैर्मल्य के लिए गुरु की शरण स्वीकारी है। गुरु ही प्रेम की पीड़ा जगाने वाला तथा परमगुरु से मिलाने वाला है और यही कारण है साधना के क्षेत्र में गुरु परमेश्वर है।

संदर्भ संकेत

१. परमेश्वरी लाल गुप्त, मौलाना दाऊद कृत चंदायन
२. परमेश्वरी लाल गुप्त, कुतुबन कृत मृगावती।
३. माताप्रसाद गुप्त (संपादक), मंझन कृत मधुमालती।
४. माताप्रसाद गुप्त (संपादक), जायसी ग्रंथावली।
५. डॉ. शिवसहाय पाठक, मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य।
६. डॉ. श्याममनोहर पाण्डेय, मध्ययुगीन प्रेमाख्यान।
७. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल (संपादक), जायसी ग्रंथावली।
८. डॉ. हरवंश लाल शर्मा, मध्ययुगीन निगुर्ण भक्ति साधना।
९. श्याम सुन्दरदास (संपादक), कबीर ग्रंथावली।
१०. डॉ. सुदेश भाटिया, संत कवि नानक : एक अनुशीलन।
११. डॉ. धर्मपाल सरीन, गुरु रविदास जी का जीवन, दर्शन तथा वाणी।
१२. कृष्ण कुमार कौशिक, संत सुन्दर दास और उनका युग।
१३. रविन्द्र कुमार सिंह, दादू काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता।
१४. रामनारायण पाण्डेय, भक्ति काव्य में रहस्यवाद।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com